झारखण्डी भाषा
साहित्य संस्कृति

# अखड़ा

*झारखण्ड की सामूहिक संस्कृति का साझा मंच*

**Supported by**
**Pyara Kerketta Foundation**

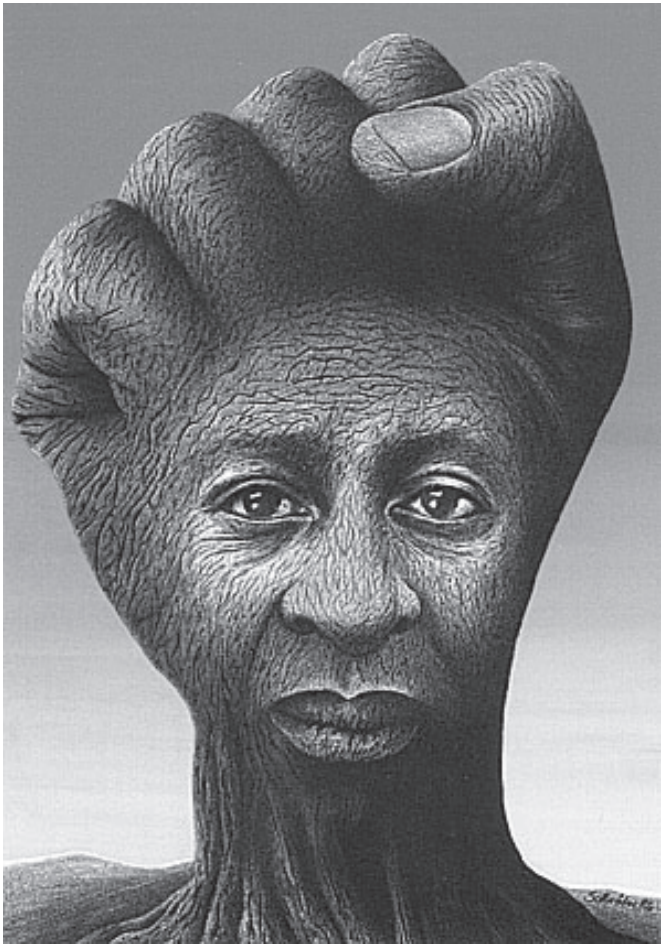

**झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा**
द्वारा प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
चेशायर होम रोड, बरियातू, रांची 834009 (झारखण्ड)
फोन : 0651 - 2201261
www.akhra.org.in
www.kharia.in
E-mail : toakhra@gmail.com

# पृष्ठभूमि

भारत के राष्ट्रीयता आंदोलन में झारखण्डी जनता की राष्ट्रीयता की पहचान, सामाजिक पुनर्गठन और विकास, दीर्घकालीन झारखण्ड आंदोलन के तीन प्रमुख सवाल हैं जिनसे झारखण्ड की उत्पीड़ित जनता पिछले 250 वर्षों से लगातार जूझ रही है।

सांस्कृतिक विरासत की रक्षा और सामाजिक पुनर्गठन का सवाल झारखण्ड के देशज लोगों की मूल चिंता है। औपनिवेशिक काल से आंतरिक उपनिवेश के दौर तक यह चिंता राजनीतिक रूप में झारखण्ड आंदोलन के बतौर प्रस्फुटित होती रही है। इस अर्थ में झारखण्ड का राजनीतिक आंदोलन मूलतः देशज अस्मिता, सांस्कृतिक पहचान और भाषायी स्वतंत्रता का आंदोलन है। औपनिवेशिक लूट ने न केवल झारखण्ड की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संरचना को छिन्न-भिन्न किया है बल्कि देशज भाषा और सांस्कृतिक पहचान को भी गहरे संकट में डाल दिया है। इस संकट के फलस्वरूप झारखण्डी भाषाओं के संरक्षण और विकास तथा मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा का मुद्दा फिर से केन्द्र में है क्योंकि झारखण्ड क्षेत्र की तरह ही झारखण्ड की देशज भाषा-संस्कृति की मूल समस्या भी अस्तित्व, पहचान और विकास की है। जिस तरह यह पूरा क्षेत्र जातीय एवं वर्गीय शोषण का शिकार रहा है, उसी तरह इसकी भाषा और संस्कृति भी। लिहाजा, झारखण्डी समाज की सांस्कृतिक पहचान और अस्मिता का यह सवाल देशज भाषाओं के संरक्षण, संवर्द्धन और विकास के साथ जुड़ा हुआ है।

संक्रमण और पुनर्जागरण के दौर से गुजरती झारखण्डी भाषाओं के शोध, अध्ययन, संकलन, सृजन और प्रकाशन की आवश्यकता आज सबसे बड़ी है। प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक झारखण्डी भाषाओं की प्रतिष्ठा, संवैधानिक मान्यता तथा भाषा-साहित्य अकादमी का गठन एवं संचालन झारखण्डी जनता की प्राथमिक आवश्यकता है। जातीय विकास के संदर्भ में झारखण्डी जन भाषाओं के जातीय स्वरूप के विकास में लिपिगत और वर्ण विन्यास की समस्याओं का सर्वसम्मत वैज्ञानिक समाधान ढूंढना भी झारखण्ड के जातीय स्वाभिमान को पुनर्स्थापित करने की दिशा में सबसे आवश्यक कार्यभार है।

सरकारी उपेक्षा और सामाजिक उदासीनता के कारण झारखण्ड के 2 करोड़ से भी अधिक देशज तथा स्थानीय लोगों की भाषा और संस्कृति गहरे संकट में है। सामाजिक भेदभाव तथा थोपे गए सांस्कृतिक मूल्यों के कारण झारखण्ड की भाषायी एवं जातीय अस्मिता विकास और पहचान की तलाश में है। लम्बे समय से सरकारी घोषणाओं के बावजूद प्रारंभिक शिक्षा में झारखण्डी भाषाओं की पढ़ाई का सवाल, सरकारी कार्यों में व्यवहार का सवाल तथा एक सर्वसम्मत वैज्ञानिक लिपि के निर्माण का सवाल, झारखण्डी भाषाओं के विकास में सबसे बड़ी समस्या है।

1991 की जनगणना के अनुसार वृहत्तर झारखण्ड की कुल आबादी का 41

प्रतिशत अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों (ST 27.13% SC 13.9%) के लोग हैं। आबादी का एक अन्य 45 से 50 प्रतिशत हिस्सा ST या SC तो नहीं है पर वे भी इस क्षेत्र के मूल निवासी हैं। ये मूल निवासी 'सदान' के नाम से जाने जाते हैं। वृहत्तर सांस्कृतिक क्षेत्र में रहने वाले आदिवासियों और सदानों की देशज भाषाएं मुख्यत: तीन वर्ग की हैं : मुण्डारी, कुड़ुख और सदानी।

मुण्डा भाषा समूह में मुण्डारी, संताली, हो, खड़िया, भूमिज, बिरहोर, तूरी और असुरी; कुड़ुख समूह में कुड़ुख, मलतो, किसान, बेरगा, धांगरी, खेंदरो तथा सदान समूह में नागपुरी (सदानी), कुरमाली, खोरठा, पंचपरगनिया, तमड़िया, सुरगुजिया, गेमाली, गंउली, गंवारी आदि देशज भाषाएं आती हैं। झारखण्ड राज्य की जनजातीय तथा मूलवासी आबादी इन देशज भाषाओं का व्यापक इस्तेमाल करती है। जबकि पूरे भारत और विशेषकर मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और बिहार में फैले वृहत्तर झारखण्ड के देशज भाषा-भाषियों की संख्या इससे कहीं ज्यादा है।

चिंताजनक बात यह है कि औपनिवेशिक और स्वतंत्र, दोनों ही भारत में झारखण्डी भाषाओं की उपेक्षा की गई और इनके स्वाभाविक विकास को बाधित किया गया। भारतीय संविधान के स्पष्ट दिशानिर्देश और प्रावधानों के बावजूद केन्द्र एवं राज्य सरकारों ने झारखण्डी भाषा-संस्कृति के संरक्षण और विकास की दिशा में कोई प्रयास नहीं किया। हालांकि आजादी के बाद आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए राजनीतिक अधिकार के झारखण्ड आंदोलन जिसके अंतर्सूत्र सांस्कृतिक अस्मिता और भाषायी पहचान में निहित थे, के दबाव में सरकारी स्तर पर झारखण्डी भाषा और संस्कृति के विकास के लिए कुछ ठोस कदम जरूर उठाए गए।

इसके तहत 1947 के आसपास बिहार सरकार द्वारा 'आदिवासी' एवं 'होड़ संवाद' पत्रिकाओं का प्रकाशन, बिहार टेक्स्ट् बुक कमिटि द्वारा झारखण्डी मातृभाषाओं में पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण, 1957 में आकाशवाणी रांची तथा 1960 में रांची विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। 1973 ई. में रांची विश्वविद्यालय की इण्टरमीडिएट कक्षाओं में तीन झारखण्डी भाषाओं - नागपुरी, कुड़ुख और मुण्डारी की पढ़ाई रचना-पत्र के स्तर पर शुरू करने की स्वीकृति मिली। दो वर्षों बाद इन्हें स्नातक के पाठ्यक्रम में भी स्थान मिला और 1980 में 9 झारखण्डी भाषाओं (मुण्डारी, संताली, हो, खड़िया, कुड़ुख, नागपुरी, कुरमाली, खोरठा एवं पंचपरगनिया) के लिए एक स्वतंत्र 'जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग' की स्थापना की गई। इसी के साथ भाषा और साहित्य के प्रोत्साहन हेतु जनजातीय साहित्य अकादमी भी गठित हुई।

गैर-सरकारी स्तर पर भी भाषा-साहित्य और संस्कृति के विकास के लिए कई उल्लेखनीय प्रयास हुए। साठ के दशक में झारखण्डी भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी में भी कई पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ हुआ। झारखण्डी भाषाएं संगठित होने लगीं। भाषा परिषदों का गठन होने लगा। झारखण्ड की सभी भाषाओं में आधुनिक शिष्ट साहित्य की अभिनव विधाओं में रचनाएं होने लगीं। अनुसंधान कार्य भी विधिवत् शुरू

हुए। लिपि के विकास पर विशेष पहल की गई। जिसके तहत संताली में 'ओलचिकी' तथा हो में 'वारंगक्षिति' लिपि सामने आई। भाषा, लिपि और साहित्य के इन संगठित प्रयासों से सांस्कृतिक पुनर्जागरण के एक नये दौर की शुरूआत हुई जिससे राजनीतिक चेतना में भी नई स्फूर्ति आई।

लेकिन, 1990-91 के आते-आते दलगत राजनीतिक संकीर्णता और वर्चस्व के मोह से झारखण्डी राजनीति गतिरोध का शिकार हो गई। राजनीतिक दलों और सांस्कृतिक संगठनों में बिखराव आ गया। भाषा-साहित्य और संस्कृति के विकासमूलक कार्यों पर इसका प्रतिकूल असर पड़ा और सांस्कृतिक आंदोलन ठहर-सा गया।

लिहाजा, यह जरूरी है कि इस सांस्कृतिक ठहराव को तोड़ने के लिए भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षण तथा विकास कार्यों को फिर से गति दी जाए। सांस्कृतिक विरासत की रक्षा तथा सामाजिक पुनर्गठन के लिए भाषा एवं लिपि विषयक कार्यभार को पुनः संगठित किया जाए। वृहत्तर झारखण्ड के शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक विकास हेतु मातृभाषाओं में प्रारंभिक शिक्षा की गारण्टी के लिए जन-दबाव बनाया जाए।

मातृभाषा के अभाव में जाति या समाज की चेतना कुंद हो जाती है। समृद्ध और मार्जित मातृभाषा जातीय विकास का बुनियादी कारक ही नहीं, मानक भी है। झारखण्ड की देशज भाषाएं जातीय अस्मिता और सांस्कृतिक पहचान की शर्त है। इस शर्त को पूरा किये बिना सांस्कृतिक विरासत, आत्मनिर्णय के अधिकार और देशज जनतंत्र की रक्षा नहीं की जा सकती।

## झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

इन्हीं सब सवालों पर सामूहिक विचार-विमर्श तथा झारखण्डी भाषाओं के संरक्षण, संवर्द्धन और प्रचार-प्रसार हेतु राज्य स्तरीय रणनीति, कार्यक्रम एवं संगठन बनाने के लिए 20-21 दिसम्बर, 2003 को गोस्सनर कम्पाउण्ड स्थित एच आर डी सी, रांची में 'आदिवासी भाषा-संस्कृति अखड़ा' का आयोजन किया गया। बिरसा, चाईबासा के सहयोग से प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन की इकाई तेलंगा खड़िया भाषा एवं संस्कृति केन्द्र की ओर से आयोजित इस दो दिवसीय 'अखड़ा' में झारखण्ड की सभी भाषा समूहों के प्रतिनिधि साहित्यकार, भाषाविद् व संस्कृतिकर्मियों ने भाग लिया।

दो दिनों तक चले इस 'अखड़ा' में देशज और आदिवासी भाषाएं: राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य, झारखण्ड का भाषायी आंदोलन: अतीत और वर्तमान, झारखण्डी भाषाएं और सरकारी नीति, झारखण्डी लिपियों के विकास की समस्याएं, एकीकृत झारखण्डी लिपि का सवाल, झारखण्ड का सांस्कृतिक आंदोलन: संकट और चुनौतियां इत्यादि मुद्दों पर कई सत्रों में विचार-विमर्श हुआ।

इस वैचारिक अखड़ा में उपस्थित तमाम प्रतिनिधियों ने चिंता व्यक्त की कि शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ झारखण्डी लोग अपनी मातृभाषा भूलते जा रहे हैं। झारखण्डी संस्कृति जो कि मुख्यतः श्रमजीवी संस्कृति रही है उसमें धीरे-धीरे क्षरण हो

रहा है। विमर्श में यह बात साफ तौर पर उभर कर सामने आई कि झारखण्डी भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण, संवर्द्धन और इसके विकास का सवाल हमारे समय का सबसे प्राथमिक कार्यभार है। अलग राज्य बनने के बाद भी हमारी भाषा एवं संस्कृति की स्थिति वही है जो झारखण्ड-निर्माण के पूर्व थी। धर्म और संप्रदाय के बाद हमें भाषा और लिपियों के नाम पर बांटने की साजिश चल रही है। इससे मुकाबला तभी संभव है जब हमारे पास जमीनी स्तर तक ठोस संगठन, सुस्पष्ट कार्ययोजना और धारदार रणनीति हो।

उपरोक्त सवालों पर दो दिवसीय विचार-विमर्श के बाद यह सामूहिक निर्णय हुआ कि सांस्कृतिक आंदोलन तथा आपसी समन्वय एवं संवाद को निरंतरता प्रदान करने के लिए सांस्कृतिक झारखण्ड (प. बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और झारखण्ड) के स्तर पर एक साझा मंच का गठन किया जाए। मंच का नाम दिया गया - **झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा**। इसके संचालन के लिए एक तदर्थ समिति भी गठित की गई जिसमें सभी भाषाओं से एक-एक प्रतिनिधि को शामिल किया गया।

## झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा की तदर्थ कमिटि

**वंदना टेटे (संयोजक)**, श्री बंधु भगत (खड़िया), श्री सतीशचंद्र बुढ़िउली (हो), श्री बी. बी. नाग (मुण्डारी), श्री के. सी. टुडु (संताली), श्री हरि उरांव (कुड़ुख), श्री जगन्नाथ सिंह मुण्डा (पंचपरगनिया), श्री ए. के. झा (खोरठा), श्री वृंदावन महतो (कुरमाली), डा. कुमारी बासंती (नागपुरी) और श्री देवेन्द्रनाथ चम्पिया (आमंत्रित सदस्य)

इसके साथ ही लिपि की समस्या को सुलझाने के लिए **लिपि अध्ययन एवं रिपोर्टिंग कमिटि** का गठन किया गया और सभी झारखण्डी भाषाओं के लेखकों को प्रोत्साहित करने, पाठकों को विकसित करने तथा भाषायी एकता को मजबूत करने के लिए एक सामूहिक पत्रिका के प्रकाशन का प्रस्ताव भी ध्वनिमत से पारित किया गया।

## लिपि अध्ययन एवं रिपोर्टिंग कमिटि

**श्री गिरिधारी राम गौंझू (संयोजक)**, श्री देवेन्द्रनाथ चम्पिया, श्री राम दयाल मुण्डा, श्री गिरधारी गोस्वामी 'आकाशखूंटी', श्री नारायण उरांव (सैंदा)

## *झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा* त्रैमासिक पत्रिका

सामूहिक पत्रिका के संबंध में यह निर्णय लिया गया कि संगठन निर्माण, सम्पर्क और भाषा-साहित्य आंदोलन को गति देने के लिए झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा नाम से त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया जाएगा। पत्रिका लगभग 100 पृष्ठों की होगी और इसमें प्रत्येक भाषा को 10 पृष्ठ दिया जाएगा। समिति के सदस्य ही पत्रिका के सम्पादक मण्डल के भी सदस्य होंगे और संयोजक इसके कार्यकारी संपादन का दायित्व सम्हालेंगी।

## झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा का उद्देश्य/कार्यक्रम

*1. झारखण्डी भाषाओं के साहित्यकारों, संस्कृतिकर्मियों, भाषाविदों, लोक-कलाकारों और बुद्धिजीवियों को संगठित कर वृहत्तर झारखण्ड में 'अखड़ा' संगठन का विस्तार करना*

*2. संगठन विस्तार और निर्माण के लिए सबसे पहले निम्नलिखित क्षेत्रीय स्तरों पर अखड़ा के क्षेत्रीय सम्मेलनों का आयोजन करना*

*1. खूंटी/बुण्डू 2. गुमला 3. राउरकेला/सिमडेगा 4. चाईबासा/जमशेदपुर*

*5. कोटशिला/पुरूलिया 6. दुमका 7. बोकारो 8. नेतरहाट/बिशुनपुर*

*3. झारखण्डी साहित्यकारों, संस्कृतिकर्मियों एवं भाषाविदों का डाटा बेस ( निर्देशिका ) तैयार करना*

*4. सरकारी स्तर पर विद्यालयों में झारखण्डी भाषाओं की शिक्षा हेतु जन दबाव बनाना और पैरवी करना*

*5. झारखण्डी लोक संस्कृति के विविध रूपों एवं विधाओं के अध्ययन, संकलन, प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन की व्यवस्था करना*

*6. झारखण्डी भाषाओं के मानक स्वरूप निर्माण तथा एकीकृत लिपि के विकास के लिए अनुसंधान एवं अध्ययन*

*7. झारखण्डी भाषाओं में शिष्ट साहित्य के विकास के लिए लेखक-पाठक कार्यशालाओं का आयोजन*

*8. प्रदर्शकारी झारखण्डी सांस्कृतिक समूहों का गठन*

*9. झारखण्डी पत्रिका और बुकलेट्स का प्रकाशन*

*10. झारखण्डी भाषा एवं सांस्कृतिक अध्ययन, शोध और आलेखन केन्द्र की स्थापना*

*11. झारखण्डी स्वाभिमान, जनतंत्र और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए सशक्त सांस्कृतिक आंदोलन*

*12. भाषायी-सांस्कृतिक आंदोलन द्वारा सामाजिक पुनर्गठन की प्रक्रिया में तेजी लाना*

**प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन** की वेबसाइट www.kharia.in पर इस प्रयास की पूरी जानकारी राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सहयोग, समर्थन एवं सॉलिडेरिटी के लिए प्रकाशित की गई है जिसे कोई भी www.kharia.in/akhra.php पते पर विजिट कर सकता है और इस आंदोलन को मजबूत बनाने के लिए अपनी प्रतिक्रिया, सुझाव आदि समिति को भेज सकता है।

**Jharkhandi Bhasha Sahitya Sanskriti AKHRA**
Cheshire Home Road, Bariatu, Ranchi 834009 Jharkhand
Tel. : 91-651-2201261 www.akhra.org.in
E-mail : toakhra@gmail.com

“

ओल मेनाक तामा - रोड़ हों मेनाक तामा
धोरोम मेनाक तामा - आम हों मेनाम

आपकी लिपि है
आपकी अपनी भाषा है
और आपका अपना धर्म भी है

**You have your scripts,**
**You have your language**
**Your religion exists as you too.**

”

गुरु गोमके पं. रघुनाथ मुर्मू

| | |
|---|---|
| हो | ताइकेनाले<br>ताइयाकनाबु<br>ताइनगेयाले |
| खड़िया | अनिङ अवकीनिङ<br>अनिङ अइजनिङ<br>अनिङ अवनानिङ |
| खोरठा | हामिन इली<br>हामिन ही<br>हामिन रहब |
| कुरमाली | हमरे रहियो<br>हमरे अहियो<br>हमरे रहब |
| कुड़ुख | एम रहच-कम<br>एम रअःदम<br>एम रओम दिम |
| मुण्डारी | आबु बु तइकेना<br>आबु मेना बुआ<br>आब बु तइना |
| नागपुरी | हमरे रही<br>हमरे आही<br>हमरे रहब |
| पंचपरगनिया | मंय रहों<br>मंय रहम<br>मंय रहमू |
| संताली | ताहें काना बो<br>मेनाक़ बोना<br>ताहेंना बो |
| हिन्दी | हम थे<br>हम हैं<br>हम रहेंगे |
| अंग्रेजी | We are<br>We were<br>We Shall be ..... |